



OPEN ACCESS

Volume: 5

Issue: 1

Month: March

Year: 2026

ISSN: 2583-7117

Published: 28.03.2026

Citation:

श्रीमती विजयश्री मालवीय, डॉ सीताराम हर्ण
“जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों
की धारणा और दृष्टिकोण” International
Journal of Innovations in Science
Engineering and Management, vol. 5,
no. 1, 2026, pp. 217-225.

DOI:

10.69968/ijisem.2026v5i1217-225



This work is licensed under a Creative
Commons Attribution-Share Alike 4.0
International License

जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा और दृष्टिकोण

श्रीमती विजयश्री मालवीय¹, डॉ सीताराम हर्ण²

¹ शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शासकीय कुसुम स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी मालवा

² शोध निर्देशक, (रिटायर्ड प्रोफेसर)

Abstract

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा, जागरूकता एवं दृष्टिकोण का विश्लेषण करना तथा इन कारकों का जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर प्रभाव का परीक्षण करना है। यह अध्ययन सर्वेक्षण आधारित एवं मात्रात्मक प्रकृति का है, जिसमें संरचित प्रश्नावली के माध्यम से 236 किसानों से प्राथमिक आंकड़े संकलित किए गए। अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ, जैविक कृषि संबंधी जागरूकता, किसानों की धारणा, दृष्टिकोण तथा जैविक कृषि अपनाने के स्तर को प्रमुख चरों के रूप में शामिल किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु आवृत्ति, प्रतिशत, वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध तथा ANOVA परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि किसानों में जैविक कृषि के स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय लाभों के प्रति सकारात्मक धारणा विद्यमान है। सहसंबंध विश्लेषण ने सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं एवं धारणा तथा जागरूकता एवं दृष्टिकोण के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध को दर्शाया। साथ ही, विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि किसानों की धारणा जैविक कृषि अपनाने के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। अध्ययन यह संकेत करता है कि जागरूकता, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं संस्थागत सहयोग जैविक कृषि के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सतत कृषि विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

कीवर्ड: जैविक कृषि, किसानों की धारणा, जागरूकता, दृष्टिकोण, सतत कृषि विकास.

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ कृषि न केवल आजीविका का प्रमुख साधन है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला भी मानी जाती है। हरित क्रांति के पश्चात कृषि उत्पादन में वृद्धि तो हुई, परंतु रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं उन्नत कृषि रसायनों के अत्यधिक उपयोग से मृदा स्वास्थ्य, पर्यावरण संतुलन तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिले हैं। इन परिस्थितियों ने टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि पद्धतियों की आवश्यकता को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप जैविक कृषि पद्धति का महत्व पुनः स्थापित हुआ।

जैविक कृषि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, मृदा उर्वरता में सुधार, जैव विविधता के संरक्षण तथा सुरक्षित खाद्य उत्पादन पर आधारित प्रणाली है। वर्तमान समय में उपभोक्ताओं के बीच जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है तथा सरकार द्वारा भी जैविक खेती को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इसके बावजूद किसानों द्वारा जैविक कृषि को अपनाने की गति अपेक्षाकृत धीमी है, जिसका प्रमुख कारण किसानों की जानकारी, धारणा, अनुभव तथा दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ माना जाता है।

किसानों की सोच, विश्वास एवं व्यवहार किसी भी नई कृषि पद्धति के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा एवं दृष्टिकोण का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए, जिससे इसके अपनाने में आने वाली बाधाओं एवं संभावनाओं को समझा जा सके। यही आवश्यकता इस अध्ययन की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करती है।

जैविक कृषि की संकल्पना एवं विकास

जैविक कृषि एक ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं कृत्रिम वृद्धि नियंत्रकों के स्थान पर प्राकृतिक संसाधनों, जैविक खाद, हरी खाद, फसल चक्र, जैविक कीट नियंत्रण तथा पारिस्थितिक संतुलन पर आधारित तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य मृदा की प्राकृतिक उर्वरता को बनाए रखना, पर्यावरण संरक्षण करना तथा सुरक्षित एवं पोषक खाद्य पदार्थों का उत्पादन सुनिश्चित करना है। परंपरागत भारतीय कृषि प्रणाली मूलतः जैविक स्वरूप की थी, किंतु हरित क्रांति के बाद उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक आधारित खेती का विस्तार हुआ। समय के साथ मृदा क्षरण, जल प्रदूषण तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण पुनः जैविक कृषि की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में जैविक कृषि आंदोलन प्रारंभ हुआ, जबकि भारत में सरकारी योजनाओं, प्रमाणन व्यवस्था तथा बाजार मांग के कारण पिछले दो दशकों में इसका विकास तेजी से हुआ है। आज जैविक कृषि टिकाऊ कृषि विकास एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में उभर रही है।

तालिका 1: जैविक कृषि के विकास के प्रमुख चरण

अवधि / वर्ष	प्रमुख विकास	विशेषता
परंपरागत काल	प्राकृतिक आधारित खेती	गोबर खाद, फसल चक्र एवं स्थानीय ज्ञान का उपयोग
1960-1980	हरित क्रांति काल	रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का व्यापक प्रयोग
1980-2000	पर्यावरण जागरूकता चरण	रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों पर वैश्विक चिंता

2000-2015	संस्थागत विकास	जैविक प्रमाणन एवं सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं की शुरुआत
2015 से वर्तमान	टिकाऊ कृषि चरण	जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग एवं निर्यात संभावनाएँ

जैविक कृषि पद्धतियों के सिद्धांत

जैविक कृषि पद्धति प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित एवं सतत उपयोग पर आधारित कृषि प्रणाली है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, मृदा उर्वरता में वृद्धि तथा मानव एवं पशु स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह पद्धति रासायनिक इनपुट पर निर्भरता को कम करते हुए जैविक प्रक्रियाओं, पारिस्थितिक संतुलन तथा स्थानीय संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। जैविक कृषि में उत्पादन केवल मात्रा बढ़ाने तक सीमित नहीं होता, बल्कि गुणवत्ता, दीर्घकालिक उत्पादकता एवं प्राकृतिक चक्रों के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रणाली में किसान, प्रकृति एवं उपभोक्ता के बीच संतुलित संबंध स्थापित करने पर बल दिया जाता है, जिससे कृषि टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल बन सके।

जैविक कृषि पद्धतियों के प्रमुख सिद्धांत

- मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता का संरक्षण एवं संवर्धन
- प्राकृतिक पोषक चक्रों का उपयोग एवं संरक्षण
- रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का न्यूनतम या निषेध उपयोग
- जैव विविधता का संरक्षण एवं संवर्धन
- फसल चक्र एवं मिश्रित खेती को प्रोत्साहन
- जैविक खाद, हरी खाद एवं कम्पोस्ट का उपयोग
- जैविक एवं प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों का प्रयोग
- पर्यावरण एवं पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना
- स्थानीय संसाधनों एवं पारंपरिक ज्ञान का उपयोग
- सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य उत्पादन सुनिश्चित करना

जैविक कृषि अपनाने को प्रभावित करने वाले कारक

जैविक कृषि को अपनाने का निर्णय केवल तकनीकी पहलुओं पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं संस्थागत कारकों से भी प्रभावित होता है। किसानों की जागरूकता, शिक्षा स्तर, आर्थिक स्थिति, बाजार उपलब्धता तथा सरकारी सहयोग जैसी परिस्थितियाँ जैविक खेती के प्रति उनकी रुचि और स्वीकृति को निर्धारित करती हैं। जिन किसानों को जैविक कृषि के लाभों, प्रशिक्षण सुविधाओं एवं विपणन अवसरों की पर्याप्त जानकारी होती है, वे इसे अपनाने के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। इसके विपरीत प्रारंभिक उत्पादन में संभावित कमी, प्रमाणन प्रक्रिया की जटिलता तथा बाजार अनिश्चितता जैसे कारक अपनाने में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। अतः जैविक कृषि के प्रसार के लिए बहुआयामी कारकों को समझना आवश्यक है।

तालिका 2: जैविक कृषि अपनाने को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

कारक का प्रकार	प्रमुख तत्व	प्रभाव
सामाजिक कारक	शिक्षा स्तर, जागरूकता, सामाजिक प्रभाव	नई तकनीक अपनाने की प्रवृत्ति प्रभावित होती है
आर्थिक कारक	आय स्तर, लागत एवं लाभ की अपेक्षा	निवेश क्षमता एवं जोखिम लेने की इच्छा निर्धारित होती है
तकनीकी कारक	प्रशिक्षण, तकनीकी ज्ञान, संसाधन उपलब्धता	जैविक विधियों के सही उपयोग में सहायक
संस्थागत कारक	सरकारी योजनाएँ, अनुदान, विस्तार सेवाएँ	अपनाने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है
बाजार संबंधी कारक	मांग, मूल्य एवं विपणन सुविधा	उत्पाद बिक्री एवं लाभ सुनिश्चित होता है
पर्यावरणीय कारक	मृदा स्थिति, जल उपलब्धता, जलवायु	जैविक खेती की व्यवहार्यता को प्रभावित करते हैं

किसानों की धारणा एवं दृष्टिकोण का महत्व

किसानों की धारणा एवं दृष्टिकोण किसी भी नई कृषि तकनीक या पद्धति के अपनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि कृषि संबंधी निर्णय केवल संसाधनों की

उपलब्धता पर नहीं बल्कि किसान की सोच, अनुभव, विश्वास तथा अपेक्षाओं पर भी आधारित होते हैं। यदि किसान किसी कृषि पद्धति को लाभकारी, सुरक्षित एवं व्यवहारिक मानते हैं, तो उसके अपनाने की संभावना अधिक होती है। जैविक कृषि के संदर्भ में किसानों की सकारात्मक धारणा जागरूकता बढ़ाने, नवाचार स्वीकार करने तथा दीर्घकालिक कृषि स्थिरता को सुनिश्चित करने में सहायक होती है। वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण या अपर्याप्त जानकारी इसके प्रसार में बाधा उत्पन्न कर सकती है। इसलिए किसानों की मानसिकता, अनुभव एवं दृष्टिकोण का अध्ययन नीति निर्माण एवं कृषि विस्तार कार्यक्रमों के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

किसानों की धारणा एवं दृष्टिकोण का महत्व

1. नई कृषि पद्धतियों को अपनाने के निर्णय को प्रभावित करता है
2. नवाचार एवं तकनीकी स्वीकृति की गति निर्धारित करता है
3. कृषि उत्पादन एवं प्रबंधन व्यवहार को प्रभावित करता है
4. जोखिम लेने की क्षमता एवं आत्मविश्वास को प्रभावित करता है
5. प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता निर्धारित करता है
6. सरकारी योजनाओं की सफलता में सहायक होता है
7. टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि को बढ़ावा देता है
8. कृषि विकास नीतियों के निर्माण में आधार प्रदान करता है

अध्ययन के उद्देश्य

1. जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा का अध्ययन करना।
2. जैविक कृषि के प्रति किसानों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।

3. किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं एवं जैविक कृषि के प्रति उनकी धारणा के मध्य संबंध का परीक्षण करना।
4. जैविक कृषि अपनाने को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
5. किसानों की धारणा एवं दृष्टिकोण के आधार पर जैविक कृषि अपनाने की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H01: किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं एवं जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H02: किसानों की जैविक कृषि संबंधी जागरूकता एवं उनके दृष्टिकोण के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H03: जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा का उनके जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

साहित्य की समीक्षा

(Sankar & Reddy, 2022) भारत में जैविक खेती कोई नई अवधारणा नहीं है, बल्कि इसका संबंध प्राचीन कृषि परंपराओं से रहा है, जहाँ बिना रासायनिक उर्वरकों एवं कृत्रिम कीटनाशकों के खेती की जाती थी। जैविक कृषि ऐसी पद्धति है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग के माध्यम से उत्पादन किया जाता है तथा पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य को न्यूनतम हानि पहुँचाने पर बल दिया जाता है। हरित क्रांति के बाद उच्च निवेश आधारित कृषि प्रणाली की सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं, जिससे टिकाऊ एवं प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की आवश्यकता महसूस हुई। जैविक खेती विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए लाभकारी मानी जाती है क्योंकि यह कम लागत, मिश्रित खेती एवं विविधीकरण के माध्यम से आय और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देती है। साथ ही यह पारंपरिक फसलों एवं खाद्य संस्कृतियों के संरक्षण में भी सहायक है। प्रस्तुत आलेख भारत में जैविक खेती के रुझानों, क्षेत्र विस्तार तथा उत्पादन की स्थिति का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

(Gopinath et al., 2016) जैविक खेती एक ज्ञान-आधारित कृषि प्रणाली है, जिसका विकास लंबे समय से किसानों के अनुभव और पारंपरिक ज्ञान के आधार पर होता रहा है। भारत में इसकी जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हैं, जहाँ मिश्रित खेती, फसल चक्र एवं प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित कृषि पद्धतियाँ प्रचलित थीं। उत्तर वैदिक काल के ग्रंथों में भी प्रकृति-अनुकूल कृषि के सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। पिछले वर्षों में प्रमाणित जैविक खेती के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो इसके बढ़ते महत्व को दर्शाती है। जैविक खेती पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य उत्पादन पर बल देती है, जिसके कारण सरकार ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इसे प्रोत्साहित किया है। अनेक राज्यों की बढ़ती रुचि इसे कृषि क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनाती है, हालांकि इसकी आर्थिक व्यवहार्यता तथा दीर्घकालिक लाभों को लेकर अभी भी कुछ चिंताएँ विद्यमान हैं।

(C & Karunakaran, 2021) कृषि आज भी विशेष रूप से विकासशील देशों में अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का प्रमुख आधार है, इसलिए खाद्य उत्पादन के साथ-साथ इसकी स्थिरता सुनिश्चित करना आवश्यक है। पारंपरिक खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल संसाधनों का क्षरण तथा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इन चुनौतियों के समाधान के रूप में जैविक खेती को एक वैकल्पिक एवं टिकाऊ कृषि पद्धति माना जा रहा है, जिसके सिद्धांत प्राकृतिक संतुलन और संसाधन संरक्षण पर आधारित हैं। हालांकि भारत जैसे देशों में जैविक खेती का क्षेत्र अभी सीमित है, फिर भी इसके पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक लाभों की संभावनाएँ महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इसी संदर्भ में यह अध्ययन जैविक कृषि की संकल्पना, सिद्धांतों, लाभों, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की संभावनाओं का साहित्य आधारित विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

(Thippeswamy, 2022) नवीनतम आंकड़ों के अनुसार भारत जैविक कृषि क्षेत्र के विस्तार में विश्व के अग्रणी देशों में शामिल हो चुका है। पारंपरिक रूप से भारतीय किसान प्राकृतिक संसाधनों जैसे गोबर एवं जैविक अवशेषों का उपयोग करते रहे हैं, जिससे जैविक खेती की मजबूत आधारभूमि पहले से मौजूद रही है। वर्तमान समय में खाद्य

सुरक्षा, गुणवत्ता तथा पर्यावरण संरक्षण की बढ़ती चिंताओं ने टिकाऊ कृषि पद्धतियों की मांग को बढ़ाया है। रासायनिक खेती से मिट्टी, जल एवं जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, जिसके कारण जैविक कृषि की आवश्यकता अधिक महसूस की जा रही है। वैश्विक स्तर पर भी जैविक गतिविधियों का विस्तार हो रहा है, जिससे यह स्पष्ट है कि जैविक खेती पर्यावरणीय संतुलन, सुरक्षित खाद्य उत्पादन एवं दीर्घकालिक कृषि स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण विकल्प बन रही है।

(Antil & Yadav, 2023) पारंपरिक खेती ने न केवल भारत को अपने उपभोग के लिए पर्याप्त खाद्यान्न उत्पादन में मदद की, बल्कि निर्यात के लिए अधिशेष भी उत्पन्न किया। हालाँकि, बढ़ती आबादी और आय से खाद्यान्न और उद्योग के लिए कच्चे माल की माँग में और वृद्धि होगी। यह महसूस किया जा रहा है कि आधुनिक खेती प्रणाली टिकाऊ नहीं रह गई है, जैसा कि फसल उत्पादकता में गिरावट, पर्यावरण को नुकसान, रासायनिक संदूषण आदि से स्पष्ट है। अब एक वैकल्पिक कृषि पद्धति की आवश्यकता महसूस की जा रही है जो फसल उत्पादकता को बनाए रखते हुए और बढ़ाते हुए एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र में काम कर सके। जैविक खेती को पारंपरिक कृषि के सबसे प्रसिद्ध विकल्प के रूप में पहचाना जाता है। जैविक खेती खाद्यान्न की खेती की एक प्रणाली है जो मिट्टी और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बनाए रखती है। यह वह प्रणाली है जो कृषि के क्षेत्र में उर्वरकों, कीटनाशकों, हार्मोन और फ़ीड एडिटिव्स जैसे कृत्रिम रासायनिक इनपुट के उपयोग से बचती है या काफी हद तक बाहर कर देती है।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा एवं दृष्टिकोण का विश्लेषण करने हेतु एक वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित अनुसंधान पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का संकलन संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया, जिसमें सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं, जैविक कृषि संबंधी जागरूकता, धारणा, दृष्टिकोण तथा जैविक कृषि अपनाने के स्तर से संबंधित कथनों को सम्मिलित किया गया। उत्तरदाताओं का चयन सुविधाजनक नमूना विधि (Convenience Sampling Method) के आधार पर किया गया तथा कुल 236 किसानों से जानकारी प्राप्त की गई। प्रश्नावली में 5-बिंदु लिकर्ट मापनी का प्रयोग किया गया, जिसमें Strongly Agree से Strongly Disagree तक विकल्प निर्धारित

किए गए। संकलित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध (Correlation) तथा ANOVA परीक्षण के माध्यम से किया गया, जिससे अध्ययन की परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सके और वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

तालिका 3: अनुसंधान पद्धति का विवरण

घटक	विवरण
अनुसंधान का प्रकार	वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित अध्ययन
अध्ययन की प्रकृति	मात्रात्मक (Quantitative)
डेटा का प्रकार	प्राथमिक आंकड़े
डेटा संकलन का साधन	संरचित प्रश्नावली
नमूना चयन विधि	सुविधाजनक नमूना विधि
नमूना आकार	236 किसान
मापन मापनी	5-बिंदु लिकर्ट स्केल
अध्ययन के प्रमुख चर	सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ, धारणा, जागरूकता, दृष्टिकोण, अपनाने का स्तर
सांख्यिकीय उपकरण	आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध, ANOVA
विश्लेषण सॉफ्टवेयर	SPSS

आकड़ा विश्लेषण और व्याख्या

इस भाग में संकलित आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों के आधार पर प्रस्तुत की गई है। अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुरूप प्राप्त परिणामों को सारणियों के माध्यम से क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया गया है।

तालिका 4: आयु

		आयु			
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	18-25 वर्ष	45	19.1	19.1	19.1
	26-35 वर्ष	104	44.1	44.1	63.1
	36-45 वर्ष	50	21.2	21.2	84.3

45 वर्ष से अधिक	37	15.7	15.7	100.0
Total	236	100.0	100.0	

उपरोक्त सारणी के अनुसार कुल 236 उत्तरदाताओं की आयु संरचना का विश्लेषण किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि सर्वाधिक उत्तरदाता 26-35 वर्ष आयु वर्ग से संबंधित हैं, जिनकी संख्या 104 है, जो कुल का 44.1 प्रतिशत है। इसके पश्चात 36-45 वर्ष आयु वर्ग के 50 उत्तरदाता पाए गए, जो 21.2 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। 18-25 वर्ष आयु वर्ग में 45 उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 19.1 है। वहीं 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की संख्या 37 है, जो कुल का 15.7 प्रतिशत है। इस प्रकार अध्ययन में मध्यम आयु वर्ग, विशेष रूप से 26-35 वर्ष के किसानों की भागीदारी सर्वाधिक रही, जबकि अपेक्षाकृत अधिक आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की भागीदारी कम पाई गई।

तालिका 5: कृषि अनुभव

कृषि अनुभव					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	2 साल से कम	26	11.0	11.0	11.0
	2-3 साल	73	30.9	30.9	41.9
	3-5 साल	44	18.6	18.6	60.6
	5 साल से अधिक	93	39.4	39.4	100.0
	Total	236	100.0	100.0	

उपरोक्त सारणी के अनुसार कुल 236 उत्तरदाताओं के कृषि अनुभव का विश्लेषण किया गया। परिणामों से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 93 उत्तरदाता 5 साल से अधिक कृषि अनुभव वाले हैं, जो कुल का 39.4 प्रतिशत हैं। इसके बाद 2-

तालिका 7: वर्णनात्मक आँकड़े

Descriptive Statistics					
	N	Min	Max	Mean	S.D.
मेरी आर्थिक स्थिति नई कृषि पद्धतियाँ अपनाने को प्रभावित करती है।	236	1	5	2.43	1.435
शिक्षा स्तर कृषि संबंधी निर्णय लेने में सहायक होता है।	236	1	5	2.11	1.163
कृषि अनुभव नई तकनीकों को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।	236	1	5	1.81	1.046

3 साल अनुभव वाले 73 उत्तरदाता पाए गए, जिनका प्रतिशत 30.9 है। 3-5 साल के अनुभव वाले उत्तरदाताओं की संख्या 44 है, जो 18.6 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। वहीं 2 साल से कम अनुभव वाले उत्तरदाताओं की संख्या 26 है, जो कुल का 11.0 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में अधिकतर किसान अपेक्षाकृत अनुभवी हैं तथा लंबे समय से कृषि कार्य से जुड़े हुए हैं।

तालिका 6: भूमि स्वामित्व

भूमि स्वामित्व					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	1 से कम	33	14.0	14.0	14.0
	1-3	55	23.3	23.3	37.3
	3-5	73	30.9	30.9	68.2
	5 से अधिक	75	31.8	31.8	100.0
	Total	236	100.0	100.0	

उपरोक्त सारणी के अनुसार कुल 236 उत्तरदाताओं के भूमि स्वामित्व का विश्लेषण किया गया। परिणामों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 75 उत्तरदाता 5 से अधिक भूमि स्वामित्व श्रेणी में आते हैं, जो कुल का 31.8 प्रतिशत हैं। इसके बाद 3-5 भूमि श्रेणी के 73 उत्तरदाता पाए गए, जिनका प्रतिशत 30.9 है। 1-3 भूमि स्वामित्व वाले किसानों की संख्या 55 है, जो 23.3 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। वहीं 1 से कम भूमि स्वामित्व वाले उत्तरदाताओं की संख्या 33 है, जो कुल का 14.0 प्रतिशत है। इस प्रकार अध्ययन में मध्यम एवं बड़े जोत वाले किसानों की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि सीमांत भूमि स्वामित्व वाले किसानों की संख्या कम रही।

सरकारी सहायता मिलने पर मैं नई कृषि पद्धतियाँ अपनाने के लिए अधिक तैयार रहता हूँ।	236	1	5	1.85	1.131
परिवार एवं सामाजिक वातावरण कृषि निर्णयों को प्रभावित करता है।	236	1	5	2.42	1.501
जैविक कृषि मृदा की उर्वरता बढ़ाती है।	236	1	5	2.85	1.356
जैविक खेती पर्यावरण के लिए लाभकारी है।	236	1	5	2.26	1.264
जैविक उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अधिक सुरक्षित होते हैं।	236	1	5	1.73	1.073
जैविक कृषि से उत्पादन की गुणवत्ता बेहतर होती है।	236	1	5	2.08	1.265
जैविक कृषि दीर्घकाल में लाभकारी सिद्ध होती है।	236	1	5	2.40	1.474
मुझे जैविक कृषि की मूल अवधारणा की जानकारी है।	236	1	5	2.87	1.364
मुझे जैविक खाद एवं प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों की जानकारी है।	236	1	5	2.28	1.272
मैं जैविक कृषि से संबंधित सरकारी योजनाओं से परिचित हूँ।	236	1	5	1.72	1.074
मुझे जैविक उत्पादों के बाजार एवं मूल्य की जानकारी है।	236	1	5	2.10	1.270
मैं जैविक कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में जानकारी रखता हूँ।	236	1	5	2.34	1.431
मैं भविष्य में जैविक कृषि अपनाने के प्रति सकारात्मक हूँ।	236	1	5	2.66	1.674
जैविक कृषि पारंपरिक खेती से बेहतर विकल्प है।	236	1	5	2.38	1.565
मैं नई कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए तैयार रहता हूँ।	236	1	5	2.01	1.243
जैविक खेती से पर्यावरण संरक्षण संभव है।	236	1	5	2.24	1.219
जैविक कृषि ग्रामीण विकास में सहायक हो सकती है।	236	1	5	2.14	1.300
मैं अपनी खेती में जैविक खाद का उपयोग करता हूँ।	236	1	5	2.31	1.385
मैं रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करने का प्रयास करता हूँ।	236	1	5	2.04	1.083
मैं प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों का प्रयोग करता हूँ।	236	1	5	1.78	.952
मैं जैविक कृषि से संबंधित प्रशिक्षण या कार्यक्रमों में भाग लेता हूँ।	236	1	5	1.82	1.024
मैं भविष्य में पूर्ण रूप से जैविक खेती अपनाने की योजना रखता हूँ।	236	1	5	2.47	1.517
Valid N (listwise)	236				

उपरोक्त वर्णनात्मक सांख्यिकी सारणी में 236 उत्तरदाताओं के उत्तरों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें 5-बिंदु लिकर्ट मापनी का प्रयोग किया गया है तथा पूर्णतः सहमत = 1 और पूर्णतः असहमत = 5 निर्धारित किया गया है। अतः कम माध्य (Mean) मान उत्तरदाताओं की अधिक सहमति को दर्शाता है, जबकि अधिक माध्य मान अपेक्षाकृत कम सहमति को संकेत करता है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं से संबंधित कथनों में कृषि अनुभव (Mean = 1.81) तथा सरकारी सहायता (Mean = 1.85) को नई कृषि पद्धतियाँ अपनाने में महत्वपूर्ण माना गया, जबकि आर्थिक स्थिति (Mean = 2.43) एवं पारिवारिक वातावरण (Mean = 2.42) का प्रभाव अपेक्षाकृत मध्यम स्तर पर पाया गया। जैविक कृषि के प्रति धारणा संबंधी कथनों में उत्तरदाताओं ने जैविक उत्पादों की स्वास्थ्य सुरक्षा (Mean = 1.73) से सर्वाधिक सहमति व्यक्त की, जबकि मृदा उर्वरता

(Mean = 2.85) के संबंध में सहमति अपेक्षाकृत कम रही। जागरूकता से संबंधित कथनों में सरकारी योजनाओं की जानकारी (Mean = 1.72) अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि जैविक कृषि की मूल अवधारणा की जानकारी (Mean = 2.87) मध्यम स्तर की रही। दृष्टिकोण संबंधी कथनों में नई तकनीकों को अपनाने की तत्परता (Mean = 2.01) सकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाती है, जबकि भविष्य में जैविक कृषि अपनाने की सकारात्मकता (Mean = 2.66) अपेक्षाकृत संतुलित दृष्टिकोण को इंगित करती है। जैविक कृषि अपनाने के स्तर में प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों का प्रयोग (Mean = 1.78) एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी (Mean = 1.82) अपेक्षाकृत अधिक सहमति को दर्शाते हैं, जबकि पूर्ण रूप से जैविक खेती अपनाने की योजना (Mean = 2.47) मध्यम स्तर की स्वीकृति को प्रदर्शित करती है। समग्र रूप से परिणाम यह संकेत करते हैं कि किसानों में जैविक कृषि के प्रति

सकारात्मक झुकाव एवं व्यावहारिक स्वीकृति मौजूद है, यद्यपि जागरूकता एवं पूर्ण अपनाने के स्तर में अभी भी सुधार की संभावनाएँ विद्यमान हैं।

परिकल्पना परीक्षण

H01: किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं एवं जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

Correlations			
		किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं	जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा
किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं	Pearson Correlation	1	.879**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	236	236
जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा	Pearson Correlation	.879**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	236	236

** . Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

उपरोक्त सहसंबंध सारणी में किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं तथा जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा के मध्य संबंध का परीक्षण पियर्सन सहसंबंध (Pearson Correlation) के माध्यम से किया गया है। परिणामों के अनुसार दोनों चरों के मध्य सहसंबंध गुणांक $r = 0.879$ प्राप्त हुआ है, जो उच्च स्तर का सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है। साथ ही इसका महत्व स्तर (Sig. = 0.000) 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया है। यह संकेत करता है कि किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं में सुधार होने के साथ जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा भी अधिक सकारात्मक होती है। चूँकि प्राप्त p-value 0.01 से कम है, अतः शून्य परिकल्पना (H01), जिसमें दोनों चरों के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं होने की बात कही गई थी, अस्वीकार की जाती है। इसलिए निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि किसानों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं एवं जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति उनकी धारणा के मध्य महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

H02: किसानों की जैविक कृषि संबंधी जागरूकता एवं उनके दृष्टिकोण के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

Correlations			
		जैविक कृषि संबंधी जागरूकता	उनके दृष्टिकोण
जैविक कृषि संबंधी जागरूकता	Pearson Correlation	1	.942**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	236	236
उनके दृष्टिकोण	Pearson Correlation	.942**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	236	236

** . Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

उपरोक्त सहसंबंध सारणी में किसानों की जैविक कृषि संबंधी जागरूकता एवं उनके दृष्टिकोण के मध्य संबंध का परीक्षण पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण द्वारा किया गया है। परिणामों के अनुसार दोनों चरों के मध्य सहसंबंध गुणांक $r = 0.942$ प्राप्त हुआ है, जो अत्यंत उच्च एवं सकारात्मक संबंध को दर्शाता है। साथ ही इसका महत्व स्तर (Sig. = 0.000) 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया है। यह परिणाम संकेत करता है कि जैसे-जैसे किसानों की जैविक कृषि संबंधी जागरूकता बढ़ती है, वैसे-वैसे उनके दृष्टिकोण में भी सकारात्मकता बढ़ती है। चूँकि p-value 0.01 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना (H02), जिसमें दोनों चरों के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं होने की बात कही गई थी, अस्वीकार की जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि किसानों की जैविक कृषि संबंधी जागरूकता एवं उनके दृष्टिकोण के मध्य महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

H03: जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा का उनके जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

ANOVA					
जैविक कृषि अपनाने के स्तर					
	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	1007.235	11	91.567	32.129	.000
Within Groups	638.392	224	2.850		
Total	1645.627	235			

उपरोक्त ANOVA सारणी में जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा का उनके जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर प्रभाव का परीक्षण किया गया है। परिणामों के अनुसार समूहों के बीच विचरण (Between Groups Sum of Squares = 1007.235) तथा समूहों के भीतर विचरण (Within Groups Sum of Squares = 638.392) प्राप्त हुआ है। प्राप्त F-मान 32.129 है, जिसका महत्व स्तर (Sig. = 0.000) 0.05 से कम पाया गया है, जो सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह परिणाम दर्शाता है कि किसानों की धारणा में अंतर के आधार पर जैविक कृषि अपनाने के स्तर में भी महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। चूंकि p-value 0.05 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना (H_0), जिसमें जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा का उनके जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं होने की बात कही गई थी, अस्वीकार की जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा का उनके जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि जैविक कृषि पद्धतियों के प्रति किसानों की धारणा, जागरूकता एवं दृष्टिकोण एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं तथा ये सभी कारक जैविक कृषि अपनाने के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। जनसांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अध्ययन में विभिन्न आयु एवं अनुभव वर्गों के किसानों की भागीदारी रही, जिनमें अपेक्षाकृत अनुभवी किसानों की संख्या अधिक पाई गई। वर्णनात्मक सांख्यिकी के परिणामों ने संकेत दिया कि किसानों में जैविक कृषि के स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय लाभों के प्रति सकारात्मक सोच विद्यमान है, यद्यपि कुछ क्षेत्रों में जागरूकता का स्तर मध्यम पाया गया। सहसंबंध विश्लेषण से सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं एवं जैविक कृषि के प्रति

धारणा के मध्य तथा जागरूकता एवं दृष्टिकोण के मध्य मजबूत एवं सकारात्मक संबंध स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त ANOVA परीक्षण से यह प्रमाणित हुआ कि किसानों की धारणा का जैविक कृषि अपनाने के स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। समग्र रूप से अध्ययन यह दर्शाता है कि जब किसानों को पर्याप्त जानकारी, सकारात्मक अनुभव एवं संस्थागत सहयोग प्राप्त होता है, तब वे जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाने के प्रति अधिक प्रेरित होते हैं। अतः जैविक कृषि के विस्तार के लिए किसानों की जागरूकता, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं व्यवहारिक समर्थन को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है, जिससे सतत कृषि विकास को बढ़ावा मिल सके।

संदर्भ

- Antil, D. R. S., & Yadav, P. (2023). Problems and Prospects of Organic Farming in India. *International Journal for Research in Applied Science and Engineering Technology*, 11(9), 1616–1625. <https://doi.org/10.22214/ijraset.2023.55887>
- C, B., & Karunakaran, N. (2021). Status, benefits and future prospects of organic farming in India: A review. *Journal of Management Research and Analysis*, 8(3), 103–111. <https://doi.org/10.18231/j.jmra.2021.022>
- Gopinath, K. A., Rao, C. S., Ramanjaneyulu, A. V., Jayalakshmi, M., Chary, G. R., & Venkatesh, G. (2016). Organic Farming Research in India: Present Status and Way Forward. *International Journal of Economic Plants*, 3(3), 98–101.
- Sankar, A. S., & Reddy, K. V. (2022). *Recent Trends in Organic Farming in India: A Study*. 10(7), 2320–2882. www.ijcrt.org
- Thippeswamy, G. (2022). INDIAN ORGANIC AGRICULTURE: THE CURRENT SITUATION. *IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES*, 11, 2843–2856.